IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'जे० कृष्णमूर्ति के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन'

(A Study of the Philosophical and Educational Ideas of J. Krishnamurti)

डॉ0 के0एन0 गुप्ता

एसो. प्रो., शिक्षा संकाय (बी0एड0)

वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर

प्रस्तावना:

जे० कृष्णमूर्ति एक प्रसिद्द दार्शनिक, शिक्षाविद एवं आध्यात्मिक विषयों के कुशल एवं परिपक्व लेखक एवं प्रवचनकर्ता थे। इनका जन्म 12 मई 1895 तमिलनाडु के मदन पल्ली नामक गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता नरायनिया एक थियोसोफिट थे एवं ब्रिटिश प्रशासन में कर्मचारी थे। ये भारत, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया की यात्रायें की। ये भी थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्य थे। 1928 में इन्होने कृष्णमूर्ति फाउंडेशन की स्थापना किया। 'आर्डर ऑफ़ द स्टार इन ईस्ट' की भी स्थापना किया एवं इसके प्रमुख थे। लोगो को 'वर्ल्ड टीचर' बनाने को प्रेरित किया। इन्होने अनेक विद्यालयों की स्थापना की। न्यूयोर्क में संयुक्त राष्ट्र में बोलने के लिए 04 जनवरी 1986 को आमंत्रित किया गया। यह उनका अन्तिम भाषण था। 17 मई 1986 को इनका देहावसान हो गया।

दार्शनिक विचार:

कृष्णमूर्ति के अनुसार "दर्शन वह हैं जो हमें सत्य के लिए प्रेरित', 'जीवन के लिए प्रेम' और 'प्रज्ञा के लिए प्रेम' जागृत करता है। दर्शन व्यक्ति की उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराता है कि मैं कौन हूँ? बाह्य एवं आंतरिक जगत में होने वाले प्रत्येक स्पन्दन का प्रशिक्षण बोध होना ही वास्तविक दर्शन है।" कृष्णमूर्ति किसी भी धर्म ग्रन्थ या शास्त्र के अनुसार संस्कार या कर्म को स्वीकार करते हुए स्वन्त्रता और संवेदनशीलता के साथ विवेक और प्रज्ञा से प्रेरित कर्म को स्वीकार करते हैं। सत्यान्वेषण और आत्मानुसंधान ही जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते है, न कि मोक्ष की।

तत्व मीमांसा:

- *ईश्वर सम्बन्धी विचार:-* कृष्णमूर्ति जी ईश्वर का निषेध नहीं करते परन्तु ऐसा मानते हैं किउस अनुभूति को विचारों द्वारा सम्प्रेषित नहीं किया जा सकता है। ईश्वर शब्द पर कोई बल नही देते है, उनका कहना है न तो ईश्वर, शब्द ही ईश्वर है, न मंदिर आदि में रखी गयी ईश्वर की प्रतिमा ही ईश्वर हैं। हम तरह - तरह के विश्वासों, मतों से ईश्वर को ढकते हैं, जो सब मनुष्य द्वारा ही अविष्कृत संरचनाएं है और मनुष्य इसका अविष्कार करके इसमें फंस गया। उनका मत था कि ईश्वर असीम कालातीत है, उसे मन्दिरों में नहीं बन्द किया जा सकता। जो ईश्वर मंदिर में बन्द है वह तो हमारे लिए मिथ्या विश्वास, रूढ़ियों के भय के कारणमन की उपज है जिसे प्रतिमाओं के रूप में महिमा मण्डित किया जाता है। वास्तविक रूप से ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। कृष्णमूर्ति का दर्शन सभी प्रकार की मानयताओं, विश्वासों और तुलनाओं से ऊपर उठकर वास्तु के वास्तविक स्वरुप को देखने के लिए प्रेरित करता है। इनका दर्शन मानवीय समस्याओं पर विचार करके उसके निराकरण को प्रस्तुत करने वाला यथार्थ वादी दर्शन है। कृष्णमूर्ति के अनुसार "धर्म का अर्थ किसी प्रकार की संस्कार बुद्धता नहीं है। धर्म परम शांति की एक अवस्था है, जिसमे सत्यता है। वही ईश्वर है। कृष्णमूर्ति जी के एक मात्र उद्देश्य था कि कैसे मनुष्यता मुक्त होकर शाश्वत आनंद में मग्न हो जाये, जहां न किसी प्रकार का दुःख न चिंता की कोई रखा हो। उस जगत तक पहुँच चुके हैं, जहां शाश्वत आनंद है।"

- *आत्मा सम्बन्धी विचार:* कृष्णमूर्ति का आत्मा के सम्बन्ध में विचार भारतीय दर्शन में आत्मा के स्वरुप से एक दम भिन्न है। उनका मानना है सामान्यतः जिसे मनुष्य आत्मा कहता है, वह उसका अहंकार होता है जो देखने के रूप में होता है। आत्मा मनुष्य की सभ्यता, संस्कृति, उपेक्षा और आकांक्षा का परिणाम है। आत्मा के बारे में संसार में ऐसा विचार बन गया है कि वह इस भौतिक शरीर जो मरता है, नष्ट होता है। इससे अलग कोई अमृत तत्व है जो अधिक महान हैं, व्यापक है, अक्षय है, अमर है। कृष्णमूर्ति के विचार में 'आत्मा एक विचार' है।

ज्ञान मीमांसा:

मनुष्य में वैचारिक चिंतन एवं मनन होने की क्षमता उन्हें अन्य प्राणियों से अलग एवं श्रेष्ठ बनती है। अपनी वैचारिक क्षमता से ही व्यक्ति गूढ़-गूढ़ सिद्धांतों को प्रतिपादन कर अविष्कार किये। यह ज्ञान वैचारिक क्षमता का परिणाम है। सामान्य मनुष्य से लेकर विद्वान एक दूसरे के अनुमानों का ग्रहण करते है। इसी अनुभव संग्रहण का नाम ज्ञान है। ज्ञान के तीन स्वरुप है:

i. *वैज्ञानिक ज्ञान* - वैज्ञानिक विषयों के ज्ञान के साथ ही साथ गणितीय, ऐतिहासिक एवं भाषा शास्त्रीय ज्ञान की प्रमुखता दी। यह सभी विषय का ज्ञान तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर होता है।

ii. *सामूहिक ज्ञान* - यह ज्ञान पूर्वजो पर आधारित ज्ञान है। यह ज्ञान एवं अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती है। यह ज्ञान सामूहिक प्रकृति का होता है।

iii. *व्यक्तिगत ज्ञान* - संवेदनशीलता और ज्ञान के अभाव में किसी चीज का स्पष्ट बोध नहीं होता है। वास्तविक ज्ञान सत्ता का प्रतीक है। ज्ञान के द्वारा ही मार्गदर्शन होता है। इस प्रकार का ज्ञान चेतना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

- *सत्य* - कृष्णमूर्ति के अनुसार सत्य एक पथहीन भूमि है। सत्य तक पहुँचने के लिए कोई राज मार्ग नहीं।सत्यतो स्वयं के भीतर है।
- *दुःख और दुःख भोग* - भूत और भविष्य की स्मृति दुःख का कारन होती है। कष्ट का सम्बन्ध शरीर से है, जबकि दुःख मानसिक पीड़ा है। शारीरिक पीड़ा का अंत औषधि के सेवन से किया जा सकता है। लेकिन मानसिक पीड़ा को दूर करने के लिए व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थितियों को पूरी तरह से जानना होता है।
- *भय:* भय मानव मन की गंभीर बीमारी है। भय का कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली प्रतियोगिताएं एवं अनिश्चिताएं होती है। आत्म ज्ञान होने पर ही भय से मुक्ति मिलती है।
- *मृत्यु :* मृत्यु से इंसान भयभीत होता है। हमे यह पता नहीं कि जीने का अर्थ क्या है ? मृत्यु दो प्रकार की होती है शरीर की मृत्यु और मन की मृत्यु। शारीरिक मृत्यु एक अनिवार्य धरना है। मन की मृत्यु ही वास्तविक मृत्यु है।
- *प्रज्ञा :* जब हम अपनी संवेदनशीलता एवं चुनावरहित संलग्ता से किसी घटना की सम्पूर्णता में देखते है तो यह अवलोकन प्रत्यक्ष ज्ञान है। इसे ही कृष्णमूर्ति ने प्रज्ञा माना है। प्रज्ञा के कारण ही हम पृथ्वी के सौंदर्य, वृक्षों का सौंदर्य, आकाश का सौंदर्य, तारों का सौंदर्य का अवलोकन कर सकते है। ज्ञान प्रज्ञा के द्वारा कार्य नहीं कर सकता बल्कि प्रज्ञा ज्ञान पूर्वक कार्य कर सकता है। मात्र ज्ञान हमारी मानवीय समस्या का समाधान नहीं कर सकती, बल्कि इस लक्ष्य को समझना ही प्रज्ञा है।
- *ध्यान:* कृष्णमूर्ति जी के अनुसार ध्यान का अर्थ विचार का अन्त होना "ध्यान साधन और साध्य दोनों है। ध्यान मन की वह अवस्था है जिसमे मन प्रत्येक जीव को पूर्ण होने के साथ समग्रता पूर्वक देखना है। ध्यान विचार से मुक्ति तथा सत्य के आनंद में जीना है।
- *युद्ध और हिंसा* - यह प्रायः शक्ति प्रदर्शन, पद की प्रतिष्ठा, धन अथवा वासना के कारण होता है। युद्ध और हिंसा का नामक रोग किसी राष्ट्रवाद की प्रेरणा से होता है। हिंसा और युद्ध मानव के लिए खतरा है। अहिंसक व्यक्ति वही है जो विभाजनकरी प्रवृत्तियों को जानकर आत्मज्ञानी हो गया है।
- *प्रेम:* कृष्णमूर्ति का विचार है कि प्रेम एक विश्वनीय चीज है इसे जब तक विचार और वासना के धागे से न पिरोया जाय जब तक वह पेम नहीं है। प्रेम तो वह वस्तु होता है जिसमे वासनाओं, घृणाओं और किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता।
- *स्वतन्त्रता* - कृष्णमूर्ति के विचार से जब हम अपनी इच्छानुसार चिंतन, मनन करके कार्य करने की अवस्था को, स्वतन्त्रता की अवस्था कहते है।

मूल्य मीमांसा:

कृष्णमूर्ति के विचार सार्वभौमिक थे। उनका जीवन भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों प्रकार की सभ्यताओं एवं संस्कृतियों से जुड़ा था। उन्होंने सम्पूर्ण विश्व की मानवीय समस्याओं का अनुभव किया। मनुष्य भौतिक साधन से सम्पन्न होने पर भी सुखी नहीं है। वह तृष्णा, द्वेष के बोझ में दबा है । वह बाहरी विकास के साथ ही साथ आंतरिक विकास को महत्व दिया। उनका विचार था कि समाज का निर्माण हो जिसमे सादगी, प्रेम, तुष्टि और सहयोग की भावना हो। जिसमें जाति, धर्म, समान, संस्कृति आदि के आधार पर विभेदन होता तथा सभी प्रेम एवं सहयोग की भावना से एक जुट रहे। कृष्णमूर्ति के शब्दों में मरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य लोगो को उस मुक्ति और आनन्द को प्राप्त करने में सहायता करना है, जिन्हे मै स्वयं प्राप्त कर चूका हूँ और यही सम्पूर्ण मानवता का अंतिम लक्ष्य है। "

शैक्षिक विचार:

शिक्षा का सम्प्रत्यय: वास्तविक शिक्षा वह है, जो आत्मज्ञान कराये। अन्तः मन का ज्ञान ही शिक्षा है। कृष्णमूर्ति का विचार था शिक्षा द्वारा मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा का अर्थ सत्य की खोज करना, मन को परम्पराओ के बोझ से मुक्त करना, अपने आप को जानना, कार्य को सम्पूर्ण मन, हृदय और प्रेम से करना है। कार्य क्षमता का विकास करना, मेधा का उद्घाटन करना, समन्वित सम्यक दृष्टिकोण को जागृत करना, धर्म के वास्तविक स्वरुप को समझना, अधिगम की कला से है। कृष्णमूर्ति ने लाइफ अहेड में कहा – "सम्यक शिक्षा और सम्यक विकास में सीखना सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। उन्होंने सिखने का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है सीखने का तात्पर्य केवल जानकारी का संग्रह नहीं है बल्कि गहरी समझ होना है। तथ्यों को एकत्रित करना, उन्हें परस्पर सम्बंधित करना अथवा पुस्तकों एवं सूचनाओं के द्वारा ज्ञान का विकास करना ही शिक्षा नहीं बल्कि शिक्षा का अर्थ वास्तविक रूप में समझना है।"

शिक्षा का उद्देश्य:

'कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सही रिश्तो की स्थापना केवल व्यक्तियों के बीच ही नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के बिच भी। यह आवश्यक है कि शिक्षा सबसे पहले अपने मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में सहायक हो'। आगे कृष्णमूर्ति जी कहते है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेदन शील बनाना है इनके अनुसार बालको में प्रकृति और मानव प्रकृति के प्रेम को स्थापित करना है। यह संवेदनशीलता है। इस प्रकार की संवेदनशीलता में घृणा, द्वेष, क्रोध और हिंसा का कोई स्थान नहीं है। शिक्षा के उद्देश्य निम्नवत है –

- *सामाजिक विकास* - व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। व्यक्ति का विकास समाज में होता है और वे अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी समाज में रहकर करता है। । समाज का ऋण चुकाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।
- *आध्यात्मिक मूल्यों का विकास* - आध्यात्मिकता के विकास से इनका तात्पर्य बालक के आध्यत्मिक मूल्यों को विकसित करना है। बोध का विकास, नैतिक मूल्यों का विकास के ही द्वारा आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करना है। इसकी प्राप्ति के लिए आंतरिक स्वतन्त्रता, आंतरिक शांति, आत्मानुशासन, धैर्य एवं ज्ञान को अनिवार्य मानते है।
- *सांस्कृतिक विकास* - कृष्णमूर्ति शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मानव का निर्माण करना है जो सुसंस्कृत, सभ्य एवं शिष्ट हो। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में ऐसी शक्ति एवं अन्तः चेतन को बृद्धि करना है जिससे वह पूर्वाग्रहों और पूर्व धारणाओं के विपरीत दृढ़ता पूर्वक खड़ा हो सके। नवीन मूल्यों एवं नवीन संस्कृति का निर्माण कर एकीकृत मानव का विकास कर सके।
- *मानसिक विकास* - कृष्णमूर्ति के शिक्षा का उद्देश्य बालक को दिए जाने वाले विभिन्न ज्ञान के साथ - साथ उसके मन को परम्पराओं को बोझ से स्वतन्त्र करना भी है, जिससे वह अविष्कार शोध करने में समर्थ हो सके।
- *शारीरिक विकास*- स्वास्थ्य शरीर के लिए स्वस्थ मन का होना आवश्यक है। कृष्णमूर्ति का विचार था कि जब बालक शारीरिक विकारों से स्वतंत्र होगा तभी वह प्रशिक्षण हमेशा नयी वस्तु का अनुसंधान करने का पर्यटन करेगा।
- *प्रयत्न चरित्र का निर्माण करना* - शिक्षा का उद्देश्य के चरित्र का निर्माण करना है। कृष्णमूर्ति के अनुसार असत्य को त्यागकर सत्य को अपनाना ही चरित्र निर्माण है। चरित्रवान व्यक्ति का जीवन जीवन स्वयं में ही एक आनंद होता है।
- *वैज्ञानिक बुद्धि का निर्माण* - विश्व में विज्ञानं एवं तकनीनी का विकास हो रहा है। नवीन अनूसंधान हो रहे है। विज्ञान एवं तकनिकी ज्ञान के द्वारा वैज्ञानिक बुद्धि का विकास होगा।

- *संवेदनशीलता का विकास* - इनके अनुसार बालक में प्रकृति और मानव मात्र के प्रति प्रेम को स्थापित करना ही सही संवेदनशीलता है। इस प्रकार की संवेदनशीलता में घृणा, द्वेष, क्रोध और हिंसा का कोई स्थान नहीं है।
- *प्रशिक्षण प्रक्रिया* - आजीविका हेतु किसान किसी व्यवसाय में निपुण होना चाहिए। बालक के मन में समरसता एवं सामंजस्य की भावना विकसित हो।
- *सृजनात्मकता का विकास* - सृजनात्मकता का अर्थ शरीर, मन और आत्मा की तीनों की सृजनशीलता से है। बालकों में विचारों को लादने से नहीं बल्कि स्वतंत्र एवं सुखद वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। इससे बालक सृजनात्मक होंगे।

पाठ्यक्रम:

कृष्णमूर्ति के अनुसार बालकों को प्रभावशाली तरीके से व्यक्तिगत सामाजिक और विशेष प्रकार के राष्ट्रीय जीवन से जोड़े रखने में उक्त पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। इन्होने पाठ्यक्रम में निम्न बिंदुओं पर विचार किया -

- *नैतिक गुणों की शिक्षा* - नैतिक हुनो का समावेश आवश्यक है। बालक को क्रियाशील बनाने के लिए आवश्यक है।
- *उद्देश्यपूर्ण पाठ्यक्रम* - पाठ्यक्रम उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए। बालक के जीवन के उद्देश्यों को पूरा कर सके। बालकों की विषय वस्तु उनके उद्देश्य में निहित है।
- *क्रियाशीलता* - केवल ज्ञान जीवन का लक्ष्य नहीं है। आज के युग की तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता है। क्रियाशील ज्ञान ही जीवन का लक्ष्य है।
- *संतुलित पाठ्यक्रम* - बालक के सर्वांगीण विकास हेतु संतुलित पाठ्यक्रम होने चाहिए। बालक के संतुलित विकास की परिकल्पना की थी।
- *अधिगम और उपयोगिता* - पाठ्यक्रम अधिगम में सहायक एवं उपयोगी हो/ बालको की आवश्यकताओं पूरा करने वाली हो।

शिक्षण विधियां:

कृष्णमूर्ति के अनुसार बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए निम्नलिखित शिक्षण विधियां आवश्यक है -

(i)व्याख्यान विधि (ii)श्रवण विधि (iii)मनन विधि (iv)निदिध्यासन विधि (v)स्वाध्याय विधि (vi)अवलोकन विधि (vii)वार्तालाप विधि (viii)दृष्टान्त विधि (ix)प्रयोग विधि

विद्यालय:

विद्यालय शांतपूर्ण वातावरण में स्थापित होने चाहिए। इनके प्रशासन में शिक्षक - शिक्षार्थियों की भागीदारी होनी चाहिए। विद्यालय में शिक्षक परिषद का निर्माण हो। विद्यालय का निर्माण ऐसी वातावरण में होने चाहिए जहां बालक अपनी समस्याओं का समाधान कर सके। छात्र परिषद पर विद्यालय की सफाई एवं भोजन का कार्य सौपा जाय। कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित भागीरथी वैली स्कूल, रनारी, उत्तर कशी, वसंत कॉलेज फॉर वुमेन राजघाट, वाराणसी आदि इसके उदहारण है।

अनुशासन:

इनकी दृष्टि में बच्चो को आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। स्वतंत्रता का अर्थ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यों का सम्पादन करता है। दूसरों के प्रति नम्रता, विवेक शीलता और परिवेश के प्रति सजगता होना आवश्यक है।

शिक्षक:

शिक्षक को एकीकृत मानव होना चाहिए। बालकों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। शिक्षक में धैर्य होना आवश्यक है। बच्चों को सिखने में सहायता करनी चाहिये। शिक्षक को बालकों का प्रेम एवं विश्वास जीतने वाला होना चाहिए। शिक्षक को सम्पूर्ण मानव की कल्पना करते है। शिक्षक का कार्य विद्यार्थी को समेकित राष्ट्र के लिए उत्तम नागरिक का निर्माण करने वाला हो।

शिक्षार्थी:

कृष्णमूर्ति बालक के व्यक्तित्व का आदर करते थे। विद्यार्थी के चेतना के विकास पर बल देते थे। विद्यार्थी स्वयं नियम, सिद्धांत एवं मूल्यों का चयन करने योग्य बनने की क्षमता वाला हो। शिक्षार्थी पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों को थोपने का विरोध करते थे।

शिक्षक - शिक्षार्थी सम्बन्ध:

शिक्षकों का दायित्व केवल पुस्तके पढ़ना नहीं है। विषय पढ़ाना प्रथम धर्म है। दूसरा उत्तरदायित्व बच्चों के शुभ कार्यों की प्रेरणा देना। इस प्रकार जब तक छात्र अपने शिक्षक को पूरा सम्मान नहीं देता है, तबतक वह विद्या ग्रहण नहीं कर सकता। शिक्षक पर सम्पूर्ण विश्वास रखने वाले विद्यार्थी ही शिक्षक की वाणी को हृदय में उतार सकते है।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

कृष्णमूर्ति ने समाज में एक समन्वयकारी दृष्टिकोण उत्पन्न किया। वे एक भय मुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे। मानवीय गुणों को विकसित कर समग्र एकात्म व्यक्ति का विकास किय। बालक के अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने का प्रयास किया/ उनका योगदान जीवन मूल्यों की खोज में सहायक है। उन्होंने आत्मबोध पैदा करने की शिक्षा दिया। बालक में सृजनशीलता एवं प्रज्ञा विकसित करने का प्रयास किया। व्यक्ति का व्यक्ति तथा व्यक्ति एवं समाज के मध्य उचित सम्बन्ध का संवर्धन किया। हृदय में प्रेम उतपन्न करने की प्रेरणा दिया। उनकी शिक्षा समाज में फैले हुए विकृतियों को दूर करने में सहायक सिद्ध हुवा। बालको में स्वंतंत्र चिंतन को जागृत करने के प्रयास में सहायक बना। पाठ्यक्रम में जीविका चलने वाले विषयों के अतिरिक्त जीव से सम्बन्धित विषयों को समाज में जोड़ने का प्रयास किया। शिक्षक को संस्कारवान एवं प्रतिष्ठावान होने का विचार प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों के लिए उचित वातावरण के साथ ही साथ सत्य का अन्वेषक बनने की सलाह दिया। कृष्णमूर्ति जी ने जीवन में समस्याओं के निदान पर भी जोड़ दिया। स्व-अनुशासन, स्वध्याय एवं आत्मचिंतन पर विचार कर विद्यार्थियों को सजग करने की कोशिश किया। भौतिक जगत में भय मुक्त शिक्षा ग्रहण करने पर जोड़ दिया। सह शिक्षा के समर्थक थे। शिक्षा के क्षेत्र में आनुभविक एवं प्रायोगिक कार्यों पर बल दिया। अतएव इनके शिक्षा दर्शन को समाज को अतुलनीय सहयोग मिला। कृष्णमूर्ति का जीवन दर्शन उच्च कोटि के मानवता से परिपूर्ण था। वे ज्ञानी एवं विचारक थे। वे आध्यात्मवादी थे। शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक कार्य किया जो सराहनीय है। धार्मिक विचारो से सम्बन्धित शिक्षा दर्शन पर विवेकानन्द, गौतम बुद्ध, महावीर आदि दार्शनिको पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। वे शिक्षा विद एवं आध्यात्मिक गुरु के रूप में चिर स्मरणीय रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

अग्रवाल, सरस्वती: 'जे० कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन', परिप्रेक्ष्य वर्ष 2015, अंक 2

कृष्णमूर्ति जे: 'सत्य एक पथहीन भूमि' वाराणसी, कृष्णमूर्ति परिषद, 1996

कृष्णमूर्ति जे०,: 'ध्यान में मन' जे० कृष्णमूर्ति फाउंडेशन, 1997

कृष्णमूर्ति जे०: 'स्कूलों के नाम पात्र'जे० कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इण्डिया 1998

कृष्णमूर्ति जे०: 'एक जीवन परिचय एवं रचनायें', जे० कृष्णमूर्ति संवाद, वाराणसी, 2007

कृष्णमूर्ति जे: 'अन्तिम वार्ताए' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी, 2003

कृष्णमूर्ति जे: 'जीवन और दर्शन' सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०: 'जीवन की पुस्तक'' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी, 2003

कृष्णमूर्ति जे०, ; 'जीवन भाष्यकांड खंड 1' सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०, ; 'जीवन भाष्यकांड खंड 3' सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०, : 'सिखने की कला' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०,: 'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०,: 'शिक्षा क्या है?' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०,: 'शिक्षा संवाद छात्रों और शिक्षको से' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया राजघाट वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०ः 'जिसने अपनी आत्मा खो दी है' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया राजघाट वाराणसी

कृष्णमूर्ति जे०ः 'प्रथम और अन्तिम मुक्ति' मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली

कृष्णमूर्ति जे०,ः 'मानवता का भविष्य' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 2004

कृष्णमूर्ति जे०,ः 'विज्ञान और सृजनशीलता' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 1991

कृष्णमूर्ति जे०,ः 'ध्यान में मग्न' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी, 2002

कृष्णमूर्ति जे०,ः'आमूल क्रांति की आवश्यकता' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 1999

परिसंवाद अंक, 63 64, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी

परिसंवाद अंक, जनवरी मार्च, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 2005

परिसंवाद अंक, जुलाई सितम्बर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 2005

परिसंवाद अंक, दिसम्बर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 2006

परिसंवाद अंक, सितम्बर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी 2007

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका रजत जयंती विशेषांक, जुलाई दिसम्बर 2006 लखनऊ

विश्वकर्मा, एम० आर०ः 'जे० कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन', प्रज्ञा एवं दिव्या प्रकाशन वाराणसी , 1995